विचार बिन्दु

मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रोके नहीं रुकता, तभी वह कला के रूप में फूट पड़ता है। –रस्किन

हर दिन एक उपन्यास?

कुछ दिन पहले एक विज्ञापन पर नजर पड़ी। एक कृत्रिम बुद्धि यानी एआई कंपनी का विज्ञापन था। उसमें कहा गया था कि उसकी सेवा का ठाहक बनकर आप चाहें तो हर रोज एक उपन्यास लिख सकते हैं। विज्ञापन का आशय यह था कि जिस काम को करने में किसी लेखक को महीनों या वर्षों लग सकते हैं, वह काम अब कृत्रिम बुद्धि की मदद से लगभग रोज किया जा सकता है।

पहली नजर में यह दावा चमत्कृत कर सकता है। फिर थोड़ा सोचने पर एक सवाल पैदा होता है। अगर एआई एक पूरा उपन्यास लिख देता है तो उसका सर्जक कौन होगा? अगर कोई उसे अपने नाम से छपवा लेता है तो क्या यह अनैतिक नहीं होगा? मैं इससे आगे बढ़कर एक सवाल और सामने रखना चाहता हूं- अगर हर रोज एक उपन्यास लिखा जा सकता है तो क्या हर रोज एक उपन्यास रचा भी जा सकता है?

लिखने और रचने में शायद बुनियादी फर्क है।

कृत्रिम बुद्धि की क्षमताओं पर संदेह करने का अब कोई खास अर्थ नहीं रह गया है। वह कुछ ही क्षणों में किसी विषय पर लेख लिख सकती है, कहानी का 'प्लॉट सुझासकती है, पात्रों की रूपरेखा तैयार कर सकती है, संवाद लिख सकती है, भाषा को सुधार सकती है और एक ही सामठाी को अलग-अलग शैलियों और स्वरों में प्रस्तुत कर सकती है। इतना ही नहीं, आप चाहें तो वह पूरी की पूरी कहानी ही लिखकर दे सकती है। कविता, कहानी, चित्र, संगीत, अनुवाद - ऐसा शायद ही कोई रचनात्मक क्षेत्र बचा हो, जिसमें एआई ने दस्तक न दे दी हो।

लेकिन क्या यह सब सर्जनात्मकता है?

यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है कि मनुष्य के लिए रचना केवल किसी चीज को तैयार कर देना नहीं है। रचना के पीछे रचनाकार का जीवन होता है। उसके अनुभव, उसकी स्मृतियां, उसके सुख-दुख, उसकी विफलताएं, उसके रिश्ते, उसकी बेचैनियां, उसके समय और समाज से उसके सवाल और कभी-कभी उसके भीतर का वह अंधेरा भी, जिसे वह खुद ठीक से पहचान नहीं पाता।

एक लेखक कहानी लिखने बैठता है तो जरूरी नहीं कि उसे कहानी का अंत मालूम हो। कई बार वह लिखते-लिखते अपने पात्रों को खोजता है, उनके साथ चलता है और अंततः वहां पहुंचता है जहां पहुंचने की उसने पहले से कोई योजना ही नहीं बनाई थी। रचना कई बार लेखक को भी उसके बारे में कुछ ऐसा बता देती है, जो रचना शुरू करते समय वह स्वयं नहीं जानता था।

क्या एआई के साथ भी ऐसा होता है?

वह हमारे लिए असंख्य संभावनाएं पैदा कर सकती है। वह किसी कथानक को दस अलग दिशाओं में ले जा सकती है। वह किसी पात्र को और विश्वसनीय बना सकती है। वह भाषा में अटकने पर हमारी सहायता कर सकती है। वह हमारे सामने ऐसे संबंध और प्रसंग रख सकती है, जिनके बारे में हमने सोचा भी न हो। इस अर्थ में वह लेखक की एक अत्यंत शक्तिशाली सहायक हो सकती है।

लेकिन सहायक और सर्जक एक ही चीज हैं या नहीं, यह प्रश्न अभी खुला हुआ है।

मनुष्य के पास एक ऐसी चीज है जिसे किसी मशीन की क्षमता से अलग करके देखना जरूरी है - उसने जीवन जिया है। उसने किसी को खोया है, किसी को पाया है, किसी से प्रेम किया है, किसी से घृणा की है, अपमान सहा है, सफलता का स्वाद चखा है, बीमारी और मृत्यु को करीब से देखा है, किसी शहर से बिछड़ा है, किसी पुराने घर को याद किया है। उसकी स्मृति में ऐसी अगणित चीजें जमा होती रहती हैं जिनका कोई व्यवस्थित डेटाबेस नहीं होता। रचना के बीज अक्सर ऐसी ही अप्रत्याशित जगहों पर पड़े होते हैं।

मनुष्य के पास एक ऐसी चीज है जिसे किसी मशीन की क्षमता से अलग करके देखना जरूरी है - उसने जीवन जिया है। उसने किसी को खोया है, किसी को पाया है, किसी से प्रेम किया है, किसी से घृणा की है, अपमान सहा है, सफलता का स्वाद चखा है, बीमारी और मृत्यु को करीब से देखा है, किसी शहर से बिछड़ा है, किसी पुराने घर को याद किया है। उसकी स्मृति में ऐसी अगणित चीजें जमा होती रहती हैं जिनका कोई व्यवस्थित डेटाबेस नहीं होता। रचना के बीज अक्सर ऐसी ही अप्रत्याशित जगहों पर पड़े होते हैं। लेखक के मन में लिखने से पहले भी अनवरत एक अदृश्य लेखन चलता रहता है। शायद इसी कारण साहित्य में 'न लिखने' का समय भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना लिखने का समय। लेखक सड़क पर चलते हुए भी लिख रहा होता है, हालांकि उसके हाथ में कलम नहीं होती। वह बातचीत सुनते हुए, किसी चेहरे को देखते हुए, किसी घटना से दुखी या विचलित होते हुए, अकेले बैठे हुए, यात्रा करते हुए अपने भीतर कुछ जमा करता रहता है। बहुत-सी रचनाएँ कागज पर आने से बहुत पहले लेखक के भीतर आकार लेती रहती हैं।

लेखक के मन में लिखने से पहले भी अनवरत एक अदृश्य लेखन चलता रहता है।

शायद इसी कारण साहित्य में 'न लिखने' का समय भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना लिखने का समय। लेखक सड़क पर चलते हुए भी लिख रहा होता है, हालांकि उसके हाथ में कलम नहीं होती। वह बातचीत सुनते हुए, किसी चेहरे को देखते हुए, किसी घटना से दुखी या विचलित होते हुए, अकेले बैठे हुए, यात्रा करते हुए अपने भीतर कुछ जमा करता रहता है। बहुत-सी रचनाएँ कागज पर आने से बहुत पहले लेखक के भीतर आकार लेती रहती हैं।

एआई की सबसे बड़ी विशेषता उसकी गति है। और संभव है, आने वाले समय में यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी बन जाए। हम एक ऐसे समय में प्रवेश कर रहे हैं जिसमें सामठाी की कमी नहीं होगी।बल्कि सामठाी इतनी अधिक होगी कि उसकी अधिकता स्वयं एक समस्या बन जाएगी। आज कोई व्यक्ति चाहे तो कुछ मिनटों में एक कविता लिखवा सकता है, एक कहानी बनवा सकता है, एक भाषण तैयार कर सकता है और शायद जल्दी ही एक पूरा उपन्यास भी लिखवा ले। लेकिन अगर हर व्यक्ति कृत्रिम बुद्धि को आदेश देकर हर दिन एक उपन्यास लिखवा सकता है तो क्या यह बात विचारणीय नहीं है कि उन करोड़ों उपन्यासों को पढ़ेगा कौन? और उससे भी बड़ा सवाल - उनमें से किन उपन्यासों को पढ़ना जरूरी होगा?

साहित्य का मूल्य इस बात में नहीं है कि उसमें कितने शब्द हैं। न ही इस बात में कि उसे कितनी जल्दी लिखा गया। किसी महान उपन्यास को पढ़ते हुए हम उसके शब्दों के दरवाज़ों से उस जीवन में प्रवेश करते हैं, जिसे लेखक ने अपनी संवेदना से देखा और समझा है। अच्छी रचना हमें केवल सूचना नहीं देती, वह हमारे अनुभव का विस्तार करती है।

इसीलिए एआई को लेकर उत्साह के साथ-साथ हमें अपनी सर्जनात्मकता को लेकर भी सजग रहना होगा।

कहीं ऐसा न हो कि सुविधा धीरे-धीरे हमारी अपनी कोशिश की जगह ले ले। हमें लिखना है - एआई लिख देगी। हमें चित्र बनाना है - वह बना देगी। हमें किसी को पत्र लिखना है - वह लिख देगी, हमें किसी विषय पर सोचना है - वह दस विचार सामने रख देगी। काम आसान होता जाएगा, लेकिन क्या उसके साथ-साथ हमारा अपना सोचना भी कम नहीं होता जाएगा? आहिस्ता-आहिस्ता हम अपने सोचने को ही आउटसोर्स कर देंगे!

यह डर एआई से कम और हमसे ज्यादा जुड़ा हुआ है।

लेकिन इस तस्वीर में केवल एक ही रंग नहीं है। अगर एक रंग डरावना है तो दूसरा रंग यह भी है कि नई तकनीकें पुरानी क्षमताओं को हमेशा खत्म नहीं करतीं। वे कई बार उन्हें बदल देती हैं। कैमरे के आने से चित्रकला समाप्त नहीं हुई। छपाई ने मौखिक परंपरा को खत्म नहीं किया। कंप्यूटर ने लेखन को खत्म नहीं किया। इसी तरह संभव है कि एआई भी साहित्य को खत्म न करे, बल्कि साहित्य लिखने और पढ़ने के हमारे तरीके को बदल दे। हो सकता है भविष्य का लेखक एआई से कथानक के कुछ विकल्प ले, कुछ जानकारियां उससे प्राप्त करे, किसी पात्र पर उससे बातचीत करे, अपने लिखे हुए की भाषा जांचे और फिर भी अंतिम रचना उसकी अपनी हो। हो सकता है एआई लेखक के लिए वैसी ही उपयोगी हो जाए जैसी आज शब्दकोश, संदर्भ ठांथ, इंटरनेट या कॉपी एडिटर की सहायता है। क्या होगा, यह भविष्य के गर्भ में है।

जो भी हो, एक चीज शायद लेखक को अपने पास रखनी होगी - यह तय करने की क्षमता कि उसे कहना क्या है और क्यों कहना है। शब्द उपलब्ध करा देना और कहने के लिए कुछ होना अलग-अलग बातें हैं। एक मशीन हजारों सुंदर वाक्य बना सकती है। लेकिन सुंदर वाक्य अपने आप साहित्य नहीं बन जाते। साहित्य तब बनता है जब शब्द किसी मानवीय अनुभव को इस तरह छूते हैं कि पाठक उसमें अपना कोई अनुभव पहचान ले। इसलिए उस विज्ञापन को याद करते हुए बार-बार एक ही बात मन में आती है - हर रोज एक उपन्यास लिखना संभव हो सकता है, लेकिन क्या हर रोज एक उपन्यास रचा जा सकता है?

शायद इसका उत्तर अभी हमें नहीं मालूम।

और शायद यही अच्छा है।क्योंकि मनुष्य की सर्जनात्मकता का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि वह हमेशा थोड़ी-सी धुंधली और अनिश्चित रहती है। उसे पहले से पता नहीं होता कि अगली पंक्ति क्या होगी। वह कभी-कभी अपने ही बनाए रास्ते से भटक जाती है और किसी बिल्कुल अनपेक्षित जगह पहुंच जाती है।

मशीन हमें बहुत तेजी से लिखना सिखा सकती है। संभव है वह हमें बहुत अच्छा लिखना भी सिखा दे। लेकिन हमारे पास ऐसा क्या है, जिसे हम कहना चाहते हैं - यह सवाल हमें खुद से ही पूछना होगा, क्योंकि अंततः साहित्य शब्दों का उत्पादन नहीं, अनुभव का रूपांतरण है। मशीन हमें हर दिन एक उपन्यास लिखकर दे सकती है। लेकिन मशीन का लिखा हुआ मनुष्य की रचना नहीं हो जाता। दोनों के बीच वही फर्क है जो उत्पादन और सृजन के बीच है।

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,

रामदेवरा : आस्था, सद्भाव और सेवा का अनूठा संगम

राजेन्द्र जोशी

राजस्थान के जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील में स्थित रामदेवरा केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सांप्रदायिक सद्भाव, लोक आस्था और मानवीय सेवा की ऐसी जीवंत मिसाल है, जिसकी पहचान राजस्थान की लोक संस्कृति से कहीं आगे तक फैली हुई है। लोकदेवता बाबा रामदेव की समाधि यहां श्रद्धालुओं के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है। भादवा माह आते ही रामदेवरा का पूरा क्षेत्र देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं की आस्था और सेवा की भावना से सराबोर हो उठता है।

लोकमान्यता के अनुसार भादवा सुदी दशम को बाबा रामदेव ने लगभग 674 वर्ष पूर्व रामदेवरा में समाधि ली थी। सदियों का यह अंतराल बाबा रामदेव के प्रति लोगों की श्रद्धा को कम नहीं कर सका, बल्कि समय के साथ उनकी लोकस्वीकृति और व्यापक होती गई। राजस्थान ही नहीं, देश के विभिन्न राज्यों और विदेशों से भी श्रद्धालु बाबा की समाधि पर धोक लगाने पहुंचते हैं। भादवा के महीने में तो रामदेवरा की ओर जाने वाले मार्गों पर आस्था का एक विराट कारवां दिखाई देता है। लाखों श्रद्धालु कठिन यात्राएं पूरी कर बाबा के दर्शन करते हैं और अपनी मनोकामनाओं के साथ यहां पहुंचते हैं।

बाबा रामदेव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी लोक आस्था किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्भाव के प्रतीक लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं। उनकी समाधि पर विभिन्न धर्मों और समाजों के लोग श्रद्धा के साथ पहुंचते हैं। यही कारण है कि रामदेवरा की पहचान केवल एक धार्मिक तीर्थ के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और भाईचारे के केंद्र के रूप में भी बनी है।

बाबा रामदेव से जुड़ी अनेक लोककथाएं और चमत्कारों की मान्यताएं राजस्थान के जनमानस में आज भी जीवित हैं। इन कथाओं को लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनते और सुनाते आए हैं। श्रद्धालुओं के लिए इन लोकविश्वासों का अपना विशेष महत्व है। विज्ञान और तर्क के अपने अलग-अलग क्षेत्र हो सकते हैं, लेकिन लोकजीवन में आस्था की अपनी शक्ति होती है। रामदेवरा में आने वाले श्रद्धालुओं के अनुभव और विश्वास इस आस्था को निरंतर जीवंत बनाए रखते हैं।

भादवा माह में रामदेवरा की यात्रा केवल मंदिर अथवा समाधि स्थल तक पहुंचने की यात्रा नहीं रहती। यह राजस्थान की लोक संस्कृति, सामुदायिक भागीदारी और सेवा भावना का भी बड़ा उत्सव बन जाती है। बीकानेर और जोधपुर की ओर से रामदेवरा जाने वाले मार्गों पर सैकड़ों स्थानों पर सेवा शिविर लगाए जाते हैं। इन शिविरों में यात्रियों के लिए भोजन, पानी, विश्राम, चिकित्सा और अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। खास बात यह है कि इन सेवाओं में केवल स्थानीय लोग ही नहीं, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों और विदेशों से आने वाले बाबा के भक्त भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। सेवा की यह परंपरा रामदेवरा की यात्रा को और अधिक मानवीय बना देती है। कोई श्रद्धालुओं को पानी पिलाता है, कोई भोजन परोसता है, कोई रास्ते में विश्राम की व्यवस्था करता है तो कोई चिकित्सा अथवा अन्य जरूरी सहायता उपलब्ध करवाता है। सेवा करने वाले अनेक लोग इसे धार्मिक अनुष्ठान की तरह नहीं, बल्कि मानव सेवा के रूप में देखते हैं। यही भावना बाबा रामदेव की लोकमान्यता से जुड़ी सामाजिक समरसता को व्यवहार में सामने लाती है।

रामदेवरा में भल्ला फाउंडेशन की ओर से भी भंडारे और पेयजल की व्यवस्था की जाती है। दूर-दराज से पैदल अथवा विभिन्न साधनों से आने वाले यात्रियों के लिए इस प्रकार की व्यवस्थाएं बड़ी राहत का काम करती हैं। रास्ते में लगे सेवा शिविर यात्रियों को यह भरोसा देते हैं कि लंबी यात्रा के दौरान समाज उनके साथ खड़ा है। यहां सेवा करने वाले हाथ किसी से उसकी जाति, भाषा, प्रदेश अथवा धर्म नहीं पूछते; जरूरतमंद यात्री को सहायता देना ही उनकी प्राथमिकता होती है।

रामदेवरा की यह परंपरा आधुनिक समय में विशेष महत्व रखती है। जब समाज में विभिन्न स्तरों पर विभाजन की बातें सुनाई देती हैं, तब राजस्थान की धरती का यह तीर्थ बिना किसी औपचारिक घोषणा के सद्भाव और सह-अस्तित्व का संदेश देता दिखाई देता है। बाबा रामदेव की समाधि पर एक साथ पहुंचने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग और रास्तों में एक-दूसरे की सहायता करते श्रद्धालु इस बात का प्रमाण हैं कि लोक आस्था सामाजिक दूरियों को कम करने की क्षमता रखती है। रामदेवरा की यात्रा राजस्थान की उस संस्कृति का भी परिचय देती है, जिसमें 'पधारो' और 'सेवा' केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन व्यवहार का हिस्सा हैं। भादवा में यहां उमड़ने वाली भीड़ को केवल यात्रियों की संख्या के रूप में देखना इस पूरे आयोजन की आत्मा को सीमित कर देना होगा। इसके पीछे श्रद्धा है, लोकविश्वास है, सामूहिकता है और सबसे बढ़कर सेवा का भाव है।

674 वर्ष पुरानी बाबा रामदेव की समाधि आज भी उतनी ही जीवंत आस्था का केंद्र बनी हुई है। बदलते समय, रामदेवरा में समुदाय विशेष की सैकड़ो धर्मशालाएं बनी हुई है। आधुनिक यातायात और संचार के विस्तार के बावजूद बाबा के प्रति लोगों की श्रद्धा लगातार बनी हुई है। रामदेवरा इस बात का उदाहरण है कि लोकदेवता केवल मंदिरों और समाधियों तक सीमित नहीं होते; वे समाज की स्मृति, संस्कृति और सामूहिक चेतना का हिस्सा बन जाते हैं।

भादवा में जब लाखों श्रद्धालु रामदेवरा की ओर पैदल चलकर बढ़ते हैं और रास्ते में सैकड़ों सेवा शिविर उनका स्वागत करते हैं, तब मरुभूमि का यह क्षेत्र आस्था के साथ-साथ मानवीय संवेदना का भी विशाल केंद्र बन जाता है। बाबा रामदेव की समाधि पर लगने वाली धोक और रास्तों में चलने वाली सेवा-दोनों मिलकर रामदेवरा की उस पहचान को मजबूत करते हैं, जो श्रद्धा से आगे बढ़कर सद्भाव, समरसता और मानव सेवा का संदेश देती है।

राजेन्द्र जोशी
शिक्षाविद-साहित्यकार
लेखक सोशल एक्टिविस्ट
और संस्कृतिकर्मी भी है।

विश्व का पहला पर्यावरण संरक्षण आंदोलन

डॉ. अरुणा व्यास

राजस्थान में सिर साटें रूख तो भी सस्तो जाण की परम्परा रही है। यानी सिर के बदले यदि पेड़ बचता है तो वह भी सस्ता है। इसके मूल में वृक्षों को बचाने के लिए अमृता देवी के नेतृत्व में हुआ बलिदाल हमारा जीवन आलोक है। जोधपुर जिले में स्थित ऐतिहासिक गाँव खेजड़ली ने वृक्षों के लिए अपनी जान देने का विश्वभर को जैसे आलोक दिया है। जोधपुर के महाराजा को अपना महल बनाना था। महल के लिए लकड़ियों की जरूरत थी। महाराजा अभय सिंह के महल के लिए कारिंदें खेजड़ली पहुंचे। खेजड़ली गांव इसलिए पहुंचे कि वहां पर खेजड़ी के हजारों-हजार हरे पेड़ थे। इनके तने की लकड़ी फर्निचर निर्माण के लिए अच्छी जानकर महाराजा के कारिंदों ने तय किया कि गांव में खेजड़ी के पेड़ काटकर राजमहल के दरवाजों, खिड़कियों का निर्माण करेंगें।

महाराजा अभयसिंह के भेजे कारिंदे खेजड़ी गांव पहुंचे और जैसे ही उन्होने खेजड़ी वृक्ष को काटना प्रारंभ किया वहीं रहने वाली अमृता देवी भागकर सैनिकों के पास पहुंची। उसने पेड़ नहीं काटने का अनुनय किया। महाराजा के आदेश को कैसे कोई टाले ! सो पेड़ पर कुल्हाड़ियां चलती रही। अमृता देवी ने जब देखा कि उसके कहने का कोई असर नहीं हो रहा है तो वह स्वयं उस पेड़ पर लिपट गई जिसे काटा जा रहा था। कारिंदो ने उसे वहां से हटाना चाहा परन्तु वह टस से मस नहीं हुई। अमृता देवी को ऐसा करते देख गांव के और लोग भी आ पहुंचे। सभी पेड़ों के लिपट गए। राजा के कारिंदों ने बहुत समझाया परन्तु पेड़ नहीं काटने की उनकी जिद के आगे उनकी एक नहीं चली। आखिर और सैनिक बुलाए गए और तय किया गया कि यदि गांववासी कटते हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। महाराजा के भवन के लिए लकड़ी तो वहीं से ले जांएगें।

अमृता देवी के नेतत्व में आसपास के 84 गांवों के 363 बिश्नोई लोग एकत्र हो गए। सभी एक-एक कर पेड़ों का सुरक्षा कवच बनकर उनसे लिपटते गए। सबने पेड़ों का सुरक्षा कवच बनकर पेड़ों का रक्षा का संकल्प लिया। बताते हैं, पेड़ से लिपटने वालों में 69 महिलाएं और 294 पुरुष थे। महाराजा के कारिंदो ने पहले तो उन्हें समझाया परन्तु जब नहीं माने तो राजआज्ञा के विरूद्ध होने के कारण पेड़ों के साथ ही उन सभी को एक-एक कर काट डाला। अमृता देवी के नेतृत्व में पेड़ों के लिए अपने प्राणों की आहुति देने की यह घटना 1730 में हुई। इस महान बलिदान के बाद जोधपुर के महाराजा ने शाही फरमान जारी किया कि बिश्नोई क्षेत्रों में कोई हरे पेड़ नहीं काटेगा और न ही किसी जीव का शिकार होगा। बलिदान के साथ ही खेजड़ली गांव वृक्षों की रक्षा के लिए सदा-सदा के लिए अमर हो गया। यही वह घटना भी है जो दुनिया के पहला पर्यावरण संरक्षण आंदोलन के रूप में आज भी जानी जाती है।

इसी आंदोलन ने बाद में उत्तराखंड में पेड़ों को बचाने की सुंदरलाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट और गौरा देवी को प्रेरणा दी। जो बाद में 20वीं सदी के चिपको आंदोलन की प्रेरणा बना। इन सबने भी 1973 में वनों की कटाई और व्यावसायिक ठेकेदारों के विरोध में चमोली जिले में पेड़ों से लिपटकर उन्हें बचाने की मुहिम छेड़ी। इस मुहिम का असर यह हुआ कि सरकार ने वनों की कटाई की जांच के लिए समिति बनाई और 1980 में हिमालयी क्षेत्रों में पेड़ों की कटाई पर 15 साल का प्रतिबंध इसी से लगा। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण और नए कानूनों को इसी से बढ़ावा मिला।

राजस्थान के जोधपुर के खेजड़ली गांव का बलिदान इस रूप में भी महत्वपूर्ण है कि यह पर्यावरण चेतना के साथ वृक्ष और जीव-जंतुओं के संरक्षण की सोच से जुड़ा है। खेजड़ली के हुए बलिदान की स्मृति में हर साल भाद्रपद शुक्ल दशमी को आज भी खेजड़ली गाँव में एक विशाल मेला आयोजित होता है। इसमें पर्यावरण प्रेमी और बिश्नोई समाज के लोग एकत्रित होकर शहीदों को नमन करते हैं और पर्यावरण व जीव रक्षा का संकल्प लेते हैं। अमृता देवी विश्वनोई समाज से थी। इस समाज की स्थापना 15वीं शताब्दी में गुरु जंभेश्वरजी ने की थी। बिश यानी 20 की संख्या और नोईयानी नौ की संख्या। इस समाज में आज 29 नियमों की पालना की जाती हैं। इन 29 नियमों में से 8 नियम विशेष रूप से पर्यावरण और जीव रक्षा के लिए हैं। इस समाज के लोग काले हिरण और चिंकारा जैसे वन्यजीवों की अपने बच्चों की तरह रक्षा करते हैं। रेगिस्तानी इलाकों में भी ये पशु-पक्षियों के लिए पानी और चारे की आज भी नियमित व्यवस्था करते हैं। वृक्षों के पूजन की, प्रकृति संरक्षण की परम्पराओं का जो उजास खेजड़ली ने दिया, उसे याद रखते वृक्षों के संरक्षण से हम सभी को जुड़ने की आवश्यकता है।

डॉ. अरुणा व्यास
पर्यावरण एवं संस्कृति
अध्येता।

विश्व आयुर्वेद दिवस: समग्र स्वास्थ्य के लिए पारंपरिक ज्ञान व आधुनिक विज्ञान का समन्वय

डॉ. श्रीगोपाल बाहेती

आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धित ही नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य और दीर्घायु का एक संपूर्ण विज्ञान है। यह शास्त्र केवल व्याधि उत्पन्न होने के बाद उसके शमन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं के मूल सिद्धांत पर चलते हुए मनुष्य को रोग से बचने और निरंतर निरोगी बने रहने की दिशा दिखाता है। ऐतिहासिक और शास्त्रीय दृष्टि से आयुर्वेद अत्यंत समृद्ध है; महर्षि चरक के औषधि विज्ञान से लेकर महर्षि सुश्रुत के शल्यक्रिया (सर्जरी) ज्ञान तक, इसमें असाध्य मानी जाने वाली व्याधियों से लेकर सामान्य दर्द तक के मूल कारण को समाप्त करने की क्षमता है। यह पद्धित प्रकृति के सबसे करीब रहकर काम करती है, जहां पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक खनिजों के विवेकपूर्ण उपयोग से शरीर को बिना किसी गंभीर दुष्प्रभाव के भीतर से सबल बनाया जाता है। सस्ता, सुलभ, प्रकृति-सम्मत और पूरी तरह मरीज-अनुकूल होना ही इस विधा की सबसे बड़ी शक्ति है।

कालक्रम के अनुसार बदलते वैश्विक परिदृश्य में एलोपैथी का तीव्र विकास हुआ और निरंतर वैज्ञानिक अनुसंधान, आधुनिक उपकरणों तथा आपातकालीन स्थितियों में त्वरित राहत के बल पर इसने विश्व भर में प्रमुख स्थान बना लिया। इस तीव्र प्रसार के बीच आयुर्वेद जैसी समृद्ध पारंपरिक पद्धितयां धीरे-धीरे मुख्यधारा से कुछ हद तक ओझल होती चली गईं। इसमें कोई संदेह नहीं कि एलोपैथी ने शोध की निरंतरता के दम पर कई महामारियों पर नियंत्रण पाकर मानव जीवन को बड़ी राहत दी है। परंतु आज की वस्तुस्थिति यह भी है कि जीवनशैली से जुड़ी जटिल और जीर्ण बीमारियों के संदर्भ में मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की वाली स्थिति भी सामने आ रही है। रासायनिक दवाओं पर बढ़ती दीर्घकालिक निर्भरता और उनके साइड-इफेक्ट्स ने दुनिया को एक बार फिर अपनी प्राचीन और प्राकृतिक जड़ों की ओर देखने पर विवश किया है।

चिकित्सा विज्ञान का परम लक्ष्य किसी पद्धित विशेष का वर्चस्व सिद्ध करना नहीं, बल्कि पीड़ित व्यक्ति को न्यूनतम कष्ट और स्थाई समाधान के साथ निरोगी बनाना है। आज पद्धितयों के बीच किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा के बजाय उनके समन्वय की सबसे अधिक आवश्यकता है। विश्व आयुर्वेद दिवस का यह पावन अवसर एक युगांतरकारी पहल का आ ान करता है। सरकार को चाहिए कि वह आगे बढ़कर एलोपैथी, आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक पद्धितयों के शीर्ष विशेषज्ञों की एक संयुक्त राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय शोध टीम गठित करे। इसके लिए पर्याप्त बजट, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं और आवश्यक अधोसंरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक साक्ष्य-आधारित वैज्ञानिक कसौटी पर कसकर साझा चिकित्सा प्रोटोकॉल तैयार किए जा सकें। जब प्राचीन प्राकृतिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकी विज्ञान एक साथ काम करेंगे, तभी समठा, किफायती और दुष्प्रभाव-रहित चिकित्सा संभव होगी, जो वास्तव में एक स्वस्थ और सुरक्षित विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।

-डॉ. श्रीगोपाल बाहेती,
पूर्व विधायक

राशिफल सोमवार 21 सितम्बर, 2026

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत-2083, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 4:35 तक, सौभाग्य योग दिन 3:23 तक, कौलव करण सायं 5:52 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कर्क, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 4:35 से सूर्योदय तक है। आज श्री हरि जयन्ती, चन्द्र नवमी, अदु:ख नवमी, तल नवमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- चर 7:48 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:19 से 12:21 तक, शुभ 1:31 से 3:22 तक

राहुकाल- 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:18, सूर्यास्त 6:23

मेष
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

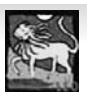

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
तुला: परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित परेशानी से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।